62 nd Kerala School Kalolsavam, January 4 to 8, 2024, Kollam

Item Code: 642 Participant Code: 125

पुर्ती हुआ दोनों सपने

मैं और मेरे दोस्तों ने मिलकर बाहर जाके घूमने के बारे में सोचा। हम पाँच लोग थे। हम सब ने अपने मन पसंदीता जगाह पर जाने का फैसला किया। दो दिन बाद हम घूमने निकल गए। हमने सुबह छे बजे की बस पकड़ी। हम वो सारे जगाह घूमने गए जहाँ हम जाना चाहते थे। जहाँ सब हम गए वहाँ सब की एक-एक संस्कार थी। उनके बारे में हमे पढ़ने को मिला, हमने अपने के लिए और हमारे परिवार वालों के लिए बहुत सारी सामान खरीदी, और तो और हमे बहुत सारे नये काम भी सीखने को मिला जो हमे नहीं आते थे। हम सबने बहुत मजा किया। और इतने मजे करने के बाद हम सब थक गए। इसी लिए हमने एक होटल पर रुखने का फैसला किया। सुबह होते ही हम सब वापस लौटने के बारे में सोचा।

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

घर वापिस जाने के लिए हमारे पास गाड़ी नहीं थी। इसी लिए हमने बस पकड़ी। बस पकड़ने के बाद दस मिनट होने पर हम पाँच मेसे एक अपने स्टोप में उतर गया। फिर दो मिनट को बाद एक और निकल गाया। उसके मैं और मेरा एक दोस्त हमारे स्टोप में उतर गए। उसमे से एक रास्ता दाए जाता है। और एक रास्ता बाए। हम दोनें का घर दो दिशावों में जाना हैं। वो अपनी घर की ओर चला गया और मैं अपनी घर की तरफ।

घर की ओर चलते - चलते रास्ते में मुझे एक बच्चे की रोने की आवाज़ सुनाई दी। जब मैंने देखा तो एक दो साल की छोटी सी बच्ची को किसीने रास्ते में रखा हुआ था। मैं वो देखकर हैरान हो गाया। पहले मुझे लगा की उस बच्ची को वहाँ से

उठाना ठीक नहीं है। इसी लिए मैंने उसे ~~की~~ ~~छ~~ उठाया नहीं और ~~पैसे~~ अपनी घर की ओर चलने लगा जैसे की मैंने उसे देखा ही ना हो।

चलते - चलते मैं रास्ता भटक गया क्योंकी मैं उस लड़की के बारे में सोचकर चल रहा था। मुझे उस लड़की की बारे में फिकर थी। इसी लिए मैं ~~उस~~ फिर से उस गली में दौड़कर गया जहा मुझे वो लड़की मिली थी। मैं उसे लेकर अपने घर गया। मेरी शादी तीन साल पेहले ही हो चुकी थी। लेकिन मुझे बच्चे नहीं है।

जब मैं घर लौट आया था तब मेरे ~~ब~~ घर वालों को उस बच्ची के बारे में कुछ नहीं पता था। फिर मैंने ~~उनस~~ उनको सारी बातें बता दी जो मेरे साथ हुआ था। पेहले मेरे घर वालों को ये इतना अच्छा नहीं लगा। इसी

तब मैंने फैसला किया की मैं अपनी पत्नी और उस बच्ची के साथ अलग घर में रहूँगा और अपनी अलग सी ज़िंदगी जीयुँगा।

हम दोनो ने मिलकर उस बच्ची को अपनी खुद की बच्ची समझकर पाला। उसे पढ़ा लिखाकर बड़ा किया। और हमने उसके शादी के बारे सोचा। लेकिन उसने मना किया। तब हमने उसे वो कहानी बताई जब वो मुझे मिली थी। वो ~~सुनकर वो~~ ये सब बातें सुनकर रोने लगी। और उसने हमसे कहाँ की "मैं एक अनाथालय खोलूँगी। क्योंकी मेरे जैसे बच्चे वहाँ पर रह सके"। ये सुनकर मैंने कहाँ "ये अच्छी बात है। लेकिन ये मत समझना की तुम अनाथ हो। हम सब तुम्हारे साथ है।" सिर्फ तुम्हारे साथ नहीं हम उन सब

के साथ है जिन्हें उनके मा-बाप ने छोड़ दिया है।"

दो महीने बाद उन्हों उनका अपना एक अनाथालय खोला। जहाँ सिर्फ बच्चे ही नहीं बूढे जवान सब तरह के लोग रहते है। फिर एक दिन उसने अपने मम्मी और पापा से ये जाकर कहाँ की "मेरा मकसद यही था की इन जैसे लोगों की मदत कर सकू। और मैं कामयाब हो गई। और अब मैं आप दोनों की सपना पूरा करने के लिए जा रही हूँ।" हम दोनो को कुछ भी समझ में नहीं आया। हमने पूछा " मतलब? तुम क्या करने जा रही हो?" ये सुनकर उसने जवाब दिया की "अरे मेरा मतलब है की मुझे शादी केलिए मंजूर है।" ये सुनकर हम दोने खुश हुए। और दो हफते बाद हमने उसके लिए लड़का ढूँढना शुरु कर दिया। दो महीने तक ढूँढते रहे। फिर आखिर एक

लड़का मिल गया। वो एक अच्छा सा लड़का था। बेटी को भी पसंद आ गया। फिर हमने शादी का सोचा। सब लोग अपने रिश्टेदार और दोस्तों के साथ शादी कराते हैं। लेकिन बेटी के कहने पर हमने उनका विवाह उस अनाथालय में करवाया जो बेटी ने बनाया था। उस दिन मैं मेरी पत्नी और बेटी - हम तीनों बहुत खुश थे। हम दोनों की खुशी इसमें थी की हम अनाथ लोगों को भी एक जिंदगी दे सके।